त्रैमासिक अंक : 17 वर्ष 2018 : आईएसएसएन : 2348-8662
जनवरी-मार्च

वाद संवाद

साहित्य, समाज और संस्कृति की पत्रिका

प्रधान संपादक
डॉ. राम रतन प्रसाद

वाद संवाद

आई. एस. एस. एन.
2348 – 8662

शोध विषयक अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक

UGC list – ~~47966~~
273
Impact factor 7.5

अंक-17
जनवरी-मार्च, 2018

स्वाक्षर

नई दिल्ली (भारत)

ISSN : 2348 – 8662

अनुक्रम

संपादकीय (iii)

1. कबीर वाणी में देशहित
   – डॉ. राम रतन प्रसाद 7
2. क्या मैं सचमुच आशावादी हूँ या ये महज भ्रांति है!
   – वृषाली 14
3. ब्रह्म जिनदास कृत 'रामरास' का दर्शन पक्ष
   – डॉ. अमृतलाल योगी 16
4. भारतीय नारी
   – हेमलता जोशी 21
5. भारतीय सामाजिक संस्थाएँ और स्त्री
   – डॉ. रमेश कुमारी 25
6. निर्मला उपन्यास में विवाह संस्था और उसके दुष्परिणाम
   – रेखा जोशी 29
7. मेरा परिवार : महादेवी वर्मा का संवेदनात्मक पहलू
   – श्रीमति विजय 35
8. योग दर्शन में मुक्ति और मुक्ति के उपाय
   – डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद सज्जन 39
9. हिन्दी उपन्यास दिव्या में स्त्री विमर्श
   – अंकिता वर्मा 42
10. छिन्नमस्ता में स्त्रियों की दशा
    – आरती कुमारी 49
11. महिला सशक्तिकरण
    – नीतू कुमारी 54
12. हिमाचल प्रदेश की चंबा आदिवासियों की संस्कृति
    – डॉ. प्रिया शर्मा 58
13. समकालीन स्त्री विमर्श के पटल पर हिन्दी साहित्य
    – आरती गंगवाल 63

NSL/ ISSN/ INF/ 2014/ 864 /Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133

ISSN : 2348 – 8662

हिमाचल प्रदेश की चंबा आदिवासियों की संस्कृति

– डॉ. प्रिया शर्मा

सहयोग की भावना मानवेचित गुणों में प्रमुख है। आज महानगरों में असहिष्णुता की भावना तेज़ी से उभर रही है। परिवार टूट रहे हैं, संबंधों में दरारें आ गई हैं। हत्या, बलात्कार तथा तलाक की घटनाएँ दिन-प्रतिदन बढ़ रही हैं। न जीएँगे न जीने देंगे अर्थात् अमानवीय कृत्य एवं घृणास्पद दृश्यों में बढ़ोत्तरी हो रही है। हम जियो और जीने दो के संदेश को लेकर आगे बढ़ना है और भारतीय संस्कृति को मिटने से बचाना है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के साथ विचारों की भिन्नता के बावजूद एक दूसरे के लिए पूरक होना चाहिए। हिमाचल प्रदेश का चंबा क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ सांस्कृतिक वैभव को आज भी समेटे हुए है। यहाँ के जनजातीय लोग एक-दूसरे की सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। ये लोग आज भी मानते हैं कि ज़मीन हमारी पैदावार का केन्द्र है, हमारी भारत भूमि है, माँ है। गद्दी जनजाति मूलरूप से भरमौरी है भेड़-पालक है। ऊन बेचने के बजाय ऊनी वस्त्र, कम्बल, पट्टू और शॉल बेचने की प्रथा है। गद्दी महिलाएँ सर्दियों में रात-दिन चरखे पर ऊन कातती हैं। पुरुष हथकरघे पर रंगदार और डिजाइनदार कम्बल और पट्टू बुनते हैं जो शुद्ध ऊनी होने के कारण काफी गर्म होते हैं।[1]

हिमाचल प्रदेश की पाँच मुख्य जनजातियाँ हैं–किन्नर, लाहौली, गद्दी, पंगवाल और गुज्जर। किन्नर जनजाति, किन्नौर जिले से संबंधित है। ये बौद्ध धर्म को मानते हैं। लाहौली जनजाति लाहौल-स्पीति से संबंध रखती है। गद्दी जनजाति भरमौर और पंगवाली पांगी से संबंध रखते हैं। गुज्जर जनजाति मुख्यतः चंबा क्षेत्र से संबंध रखती है। ये मुस्लिम धर्म को और कुछ हिंदू धर्म को मानते हैं।

हिमाचली संस्कृति बहरंगी है। यहाँ एक ओर धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सामजिक लोक कथाओं का गायन होता है, वहाँ दूसरी ओर स्थानीय लोग मानवीय संवेदना लोकहित एवं उत्सवों के अवसर पर अपना सहयोग देने में आत्मिक आनंद अनुभव करते हैं। हिमाचल प्रदेश के चंबा क्षेत्र में आज भी अनुष्ठानों और कर्मकाण्डों का निर्वहन उस क्षेत्र में रहने वालों के लिए सामाजिक कर्त्तव्य माना जाता है। यहाँ जनजातियों में सहयोग की अद्भुत पद्धति है–

1. **छोई**–'छोई' का अर्थ है विवाह के लिए लकड़ी काटना। विवाह उत्सव पर जनजातीय लोग अपना पूर्ण सहयोग देने के लिए तत्पर रहते हैं। लोगों को जो भोजन बनाकर खिलाया जाता है उसे 'धाम' कहते हैं। धाम बनाने के लिए अधिक मात्रा में लकड़ियाँ काटकार लाते हैं।

• सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, दयाल सिंह महाविद्यालय (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली